IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 6, April 2025
Impact Factor: 7.67

मानवीय संवेदनाओं की कहानियाँ: 'चित्रित नवीन कहानियाँ'

पूनमबा दादूसिंह चावड़ा

पीएच. डी. शोधछात्रा, गुजरात युनिवर्सिटी

संक्षेपीकरण:

डॉ. सूर्यदीन यादव का कहानी संग्रह 'चित्रित नवीन कहानियाँ', जिसमें कुल ग्यारह कहानियाँ हैं। इन कहानियों का हर शब्द मानवीय संवेदना और जीवन के विविध पक्षों को चित्रित करने में सक्षम है। यादव जी के लेखन में जीवन की साधारण घटनाओं और भावनाओं को अत्यंत रोचक ढंग से प्रस्तुत करने की अद्भुत क्षमता है।संग्रह की पहली कहानी 'दोस्ती' में बिल्ली की छटपटाहट और उसे बचाने की मानवीय कोशिशों को लेखक ने मार्मिकता से उकेरा है। 'तमाशा' में गरीबों की मजबूरी और समाज की कठोरता को चित्रित किया गया है। 'झगड़ा' कहानी बचपन में हुए झगड़ों और जीवन के संघर्षों से प्रेरणा लेने की सीख देती है। 'शान की खातिर' कहानी में बचपन की आर्थिक परिस्थिति और दो छात्रों के बीच हुए संघर्ष को सजीवता से दर्शाया गया है।'विद्यार्थी और अध्यापक' में गुरू-शिष्य के सुमधुर संबंधों को उजागर किया गया है, जबकि 'हेठी' धार्मिक आडंबर और जातीय भेदभाव का विरोध करती है। 'माँ की लकड़ी' में लेखक का मातृ-प्रेम और माँ के प्रति कृतज्ञता को भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है। 'कंप्यूटर की लड़की' कहानी आधुनिक समाज में महिलाओं के आर्थिक शोषण की पीड़ा को दिखाती है।'मेरी प्रिय कहानियाँ' में लेखक ने कहानी रचना की प्रक्रिया का वर्णन करते हुए अपने बाल मनोविज्ञान और रचनात्मकता पर प्रकाश डाला

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/568

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 6, April 2025
Impact Factor: 7.67

है। 'लेरूवा' में एक गाय के बछड़े से लेखक का भावनात्मक जुड़ाव दिखाया गया है, और 'लिलार' में मानवीय संवेदना और बच्ची को बचाने का अनुभव दर्शाया गया है।डॉ. यादव की कहानियाँ आम जीवन के छोटे-छोटे घटनाक्रमों में गहरे अर्थ और सशक्त संदेश छुपाए हुए हैं। उनकी कहानियाँ पाठकों के मन को छूती हैं और समाज की वास्तविकताओं से परिचित कराती हैं। उनकी रचनाओं में जो वैचारिक गहराई और संवेदनशीलता है, वह उन्हें हिन्दी साहित्य जगत का एक अमूल्य सितारा बनाती है।

मुख्य शब्द:व्यामोहवश, सुमधुर, छटपटाहट, तमाशाबीन, सांगोपांग।

डॉ. सूर्यदीन यादव का कहानी-संग्रह 'चित्रित नवीन कहानियाँ' बड़ी मनभावन और हर कहानी मर्म को उजागर करने की क्षमता रखती है। इस कहानी संग्रह का प्रकाशन 1999 में हुआ। इस कहानी संग्रह में दोस्ती, तमाशा, झगड़ा, शान की खातिर, विद्यार्थी और अध्यापक हेठी, माँ की लकड़ी, कम्प्यूटरकी लड़की, मेरी प्रिय कहानियाँ लेरूवा, लिलार आदि कहानियाँ संग्रहित हैं। इन कहानियों की रचना किस प्रकार हुई इसके बारे में संग्रह के आवरण पृष्ठ पर यादव जी लिखते हैं – "यहमेरालेखननहीं, अंकुरित हो रही कला का सचित्र रूप है। बचपन से ही रंग-बिरंगी उड़ती तितलियों के पीछे दौड़ना, बैठे पक्षियों को निहारना, पिल्लों के साथ खेलना और उनकी कमी महसूस होने पर उनके व्यामोहवश उनके चित्रों को कागज पर बनाना अच्छा लगा। चित्रकला को शब्दों वाक्यों द्वारा सजाना शुरू किया। उन छोटे मोटे सत्य चित्रों ने कहानियों का रूप धारण कर लिया। वे बिम्ब चित्रित नवीन कहानियाँ मेरे हौंसले की पहली तस्वीर हैं।" (1) डॉ. सूर्यदीन यादव जी के कहानियों के बारे में डॉ. सोनल ऊँडविया कहती हैं –"संग्रहकीकहानियाँ यादव जी की जीवनानुभूति से जुड़ी हुई हैं। अपनी सामान्य कहानियों में भी वे एक तरफ सोद्देश्यात्मकता की रक्षा बराबर करते प्रतीत होते हैं। यादव जी में शून्य

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 6, April 2025
Impact Factor: 7.67

में दृश्य दिखा सकने की एक अद्भूत शक्ति है। उनकी कहानियों में जो सोच और समझ, वैचारिकता और संवेदना एवं गहन संवेदना अंतर्भूत रहती है, वह आम पाठक से छिपी नहीं रहती। आदमी का अंतर्मन, उसका परिवेश, उस परिवेश से उसकी संबद्धता, उसी में जिंदगी के अर्थ पाने की उनकी कोशिश को उनकी कहानियों में देख सकते हैं।" (2)

यादव जी के 'चित्रित नवीन कहानियाँ' कहानी संग्रह की पहली कहानी 'दोस्ती' है। इस कहानी में लेखक ने लोटे में फाँसी बिल्ली की छटपटाहट मात्र एक जीव की घबराहट और खटपटाहट न होकर बाल कथाकार करण के पूरे परिवार की छटपटाहट बन जाती है। लेखक ने इसको बखूबी वर्णन किया है। एक बार मट्ठा पीते समय बिल्ली का मुँह लोटे में फँस जाता है। फँसने के बाद उसका हिलना-डुलना, उछलना-कूदना, पटकना और इसके कारण लेखक और घरवालों के मन में आश्चर्य, डर, भय, दया जैसे भावों का उत्पन्न होना, इस सबका वर्णन लेखक ने किया है। लेखक तथा उनके माता-पिता की बिल्ली को बचाने की चिंता मानवीय संवेदना का सर्वोत्तम उदाहरण है। लेखक द्वारा की गई बिल्ली को बचाने का उपाय बड़ी रोचकमय बन पड़ी है। कहानी का अंत लेखक और बिल्ली की दोस्ती और पत्नी प्रेम को व्यक्त करते हुए यादव जी लिखते हैं – "दोस्तबननाहैतोलोटेमेंफँसो।" (3)

'तमाशा' कहानी में लेखक ने गरीब लोग पापी पेट के लिए क्या-क्या नहीं करते इसका लेखक ने बखूबी वर्णन किया है। दूसरी तरफ तमाशा का मुख्यपात्र बना वह व्यक्ति समाज के समक्ष अपनी मजबूरी और लाचारी को दर्शाता है, पापी पेट के सवाल के लिए उसे क्या-क्या नहीं करना पड़ता। कहानी पाठक के मन को छूती है और आत्मचिन्तन करने के लिए विवश भी करती है।

'झगड़ा' कहानी में यादव जी ने बचपन में हुए झगड़ों की बात कही है। वे कहते हैं कि झगड़ा मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। महुए के झगड़े, कुसलों के झगड़े, आम केटिकोरों के झगड़े, पके आमों के झगड़े, खेल के झगड़े, गुल्ली-डंडे के झगड़े आदि जैसे कई झगड़ों से यादव जी ने काफी कुछ पाया है। कहानी में उन्होंने

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 6, April 2025 Impact Factor: 7.67

बचपन में देखा हुआ झगड़ा, जिसमें उनके दोस्त राघव को दूसरे गाँव के लड़कों ने उसके सामने ही पीट दिया था और यादव जी अपने दोस्त के लिए कुछ भी नहीं कर सके थे। इस बात का उनको बहुत दु:ख होता है। वे कहते हैं – "तमाशाबीनबनकरखेलदेखतेरहनाऔरचाहकरभीकुछ न कर पाना यह भी कोई जिंदगी है। धिक्कार है ऐसे जीवन को, जो दूसरों के लिए कुछ न कर सके। यही कुछ न कर पाना ही तो शायद मुझमें किसी नवीन चेतना को जन्म दे गया।" (4) वेआगेकहतेहैं–"वेझगड़े-फसादनहींजीवनकेसंघर्षथेऔरउन्हींसंघर्षोंकीशक्तिमेरेलेखनकीचेतनाशक्तिबनगई।चेतनाशक्तिकाआधारवहीतो दरअसलमेरीअपनीजमीनहै।उसीपरखड़ासंघर्षकरतारहाहूँ।" (5)

'शान की खातिर' कहानी की शुरूआत में यादव जी ने अपने बचपन के दिनों को याद करते हुए अपने घर की आर्थिक परिस्थिति का चित्रण किया है। स्कूल में दो लड़कों राजन और नरेश के बीच हाथापाई होती है और दोनों किस प्रकार एक-दूसरे से लड़ते हैं, इसका आँखों-देखा चित्रण यादव जी ने किया है। शान की खातिर लोग जान की बाजी लगा देते हैं तो कुछ लोगों को शान की फिक्र ही नहीं होती, इस बात को उन्होंने दो छात्रों के बीच हुए झगड़े के माध्यम से बताया है।

'विद्यार्थी और अध्यापक' कहानी में लेखक ने एक ओर आचार्यत्व का अवमूल्यन और दूसरी तरफ सच्चे शिष्य की महिमा का सांगोपांग वर्णन किया गया है। यह कहानी आज के विद्यार्थी और अध्यापकों को नई राह, नई रोशनी देने में सक्षम है। यादव जी जब कक्षा नौ में पढ़ रहे थे, तब एक अध्यापक छात्रों से पैसे लेकर सभी छात्रों को पूरी कॉपियाँ नहीं दे सकें और अंत में वे अध्यापक तबादला होने से चले जाते हैं। पूरी कॉपियाँ न मिलने वालों में एक लेखक भी थे, पर वह अफसोस नहीं करते। यादव जी मानते हैं गुरू हमें सबसे अनमोल चीज देकर गए हैं और वह था ज्ञान। इस कहानी में विद्यार्थी और अध्यापक के सुमधुर संबंध को व्यक्त किया गया है। विद्यार्थियों को अध्यापकों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, ये बताने का प्रयास किया गया है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 6, April 2025
Impact Factor: 7.67

'हेठी' नामक कहानी में यादव जी ने अपने धार्मिक जीवन की झलकियाँ प्रस्तुत की हैं। वे धार्मिक आंडबरों, ढोंग, पाखंड को स्वीकारते नहीं है। लेखक सभी मनुष्य को एक ही ईश्वर की संतान मानते हैं, सभी को एक समान मानना ही वह अपना धर्म समझता है। उस सयम नात-जात का जो भेदभाव था, उसका वर्णन शास्त्री ईर्ष्यानंद एवं छब्बे जी के प्रसंग को लेकर किया है। लेखक मानता है कि अज्ञानता ही सबसे बड़ा पाप है। हेठी होने का डर मनुष्य में ईर्ष्या उत्पन्न करता है।

'माँ की लकड़ी' कहानी में लेखक को विद्या की देवी माँ सरस्वती एवं जन्म देने वाली अपनी माँ की चिंता होती है। लेखक स्वाध्याय परिवार का स्वाध्यायी है और जब वह पूज्य दादा जी का प्रवचन सुनता है, सब सोच में डूब जाता है कि उसकी अपनी भी माँ है, जिसने उनको बहुत कुछ दिया है। उसी के कारण माँ सरस्वती के उपासक बन पाए हैं। इस कहानी में लेखक का मातृ-प्रेम उजागर हुआ है।

'कम्प्यूटर की लड़की' कहानी में गाँव की अनपढ़ घसियारिनो से लेकर ऑफिस में टेबल वर्क करती मॉर्डन लड़कियों से सजीवित कहानी है। इस कहानी में लेखक ने अपनी कहानियों को कंपोज़ कर रही लड़की, उसकी छोटी-छोटी चेष्टाओं का वर्णन किया है। लेखक की 'कच्चाघर' कहानी का कथानक कहानी में कम्प्यूटर वाली लड़की एवं लेखक के बीच बातचीत का माध्यम बनती है। कम्प्यूटर पर बैठी हुई लड़की के साथ हो रहे आर्थिक शोषण को जानकर लेखक दु:खी होता है और शोषण के खिलाफ अपना विरोध व्यक्त करता है।

'मेरी प्रिय कहानियाँ' में लेखक ने कहानी रचना की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला है। लेखक मानना है कि कहानी की कथावस्तु हमारे जीवन-जगत के अनुभव होते हैं। हमारे जीवन में हमारे सामने जो घटनाएँ घटती हैं, वही कहानी की कथा बन जाती हैं। इस कहानी में लेखक ने 'दोस्ती', 'तमाशा', 'विद्यार्थी और अध्यापक' कहानियों की रचना किस प्रकार हुई, कैसे अनुभव हुए और उसका बाल मन किस प्रकार रचनात्मक बन पड़ा, इसका विस्तृत वर्णन किया है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 6, April 2025
Impact Factor: 7.67

'लेरूवा' कहानी में लेखक ने अपने के यादों का वर्णन किया है। लेखक के घर में एक ललकी नामक गाय थी, जिसको एक लेरूवा जन्मा था। लेखक को लेरूवा बहुत प्यारा लगता था। बाल सहज मनोवृत्ति का वर्णन लेखक ने किया है। लेरूवा को साक्षर बनाने की कोशिश करना, लेरूवा की माँ ललकी को चराने ले जाना, छुप-छुपकर उसका दूध पीना माँ द्वारा ललकी पर बुरा साया समझकर साए को उतारना आदि सभी छोटी-छोटी घटनाएँ कहानी को रसप्रद बना देती हैं।

'लिलार' का अर्थ मस्तक होता है, अर्थात् किसी के ऊपरी भाग को भी लिलार कहते हैं। एक तीन साल की लड़की लीला कुएँ की लिलार कच्ची होने के कारण कुए में गिर जाती हैं और फिर किस प्रकार वह बचती हैं, उस अनुभव को कहानी की कथा का माध्यम बनाया गया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि यादव जी द्वारा रचित सभी कहानियाँ अपनी एक अलग छाप छोड़ती है।

यादव जी की कहानियाँ गागर में सागर के समान हैं, जिनमें थोड़े में लेखक बहुत कुछ कह जाते हैं। उनकी कहानियों में एक के बाद एक घटनाएँ हमारे सामने प्रस्तुत होती हैं। डॉ. सोनल ऊंडविया कहती हैं –

"ज्योंकेलनकीपातमेंपात-पातमेंपात।

त्यों यादव जी की बात में बात-बात में बात॥" (6)

अंत में कह सकते हैं कि यादव जी हिन्दी साहित्य जगत के एक ऐसे सितारे हैं, जिनकी चमक कभी कम नहीं होगी।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 6, April 2025
Impact Factor: 7.67

संदर्भ सूची:

(१). चित्रित नवीन कहानियाँ, डॉ. सूर्यदीन यादव, प्रथम संस्करण– 1969, प्रकाशन – चिन्तन प्रकाशन, पृ. - 6

(२). जमीनी अनुभव के कहानीकार, सूर्यदीन यादव, संपादक – डॉ. सुरेन्द्र प्रताप यादव, संस्करण – 2012, भावना प्रकाशन, पृ. – 112, 113

(३). 'नवीन चित्रित कहानियाँ' – सूर्यदीन यादव, संस्करण – 1969, चिन्तन प्रकाशन, पृ. – 54

(४). 'चित्रित नवीन कहानियाँ' – डॉ. सूर्यदीन यादव, संस्करण 1969, चिन्तन प्रकाशन, पृ. – 18

(५). वही, पृ. – 18

जमीनी अनुभव के कहानीकार, डॉ. सूर्यदीन यादव, संपादक – डॉ. सुरेन्द्र प्रताप यादव, संस्करण – 2012, भावना प्रकाशन, पृ. - 116